

Padma Vibhushan



SHRI RADHEY SHYAM KHEMKA (POSTHUMOUS)

Shri Radhey Shyam Khemka had rendered his exceptional contribution of taking Sanatan literature to the masses by authoring, editing & publishing rare ancient texts into regional languages. He was the editor of 'Kalyan', a spiritual monthly in Hindi, first published in 1925 by the Gita- Press, Gorakhpur. The magazine is a revered text for millions of spiritual seekers all over India and the World.

2. Born on 12th December, 1935 in Barahiya, Bihar, Shri Khemka belonged to a Marwari family of Fatehpur Shekhawati in Rajasthan. He did his Primary education in Munger. He studied law and Masters (M.A) in Sanskrit from the Banaras Hindu University. As he was reared in a cultural Marwari family and in devotional environment, he was deeply impacted by the company of revered saints and Gurus and especially with the most revered saint of all, Sant Shri Karpatri Ji Maharaj.

3. Shri Khemka shifted permanently to Kashi (Varanasi) in 1956 and started a paper business. He later handed over this business to his successors and devoted himself completely into editing, publishing and social Welfare. Despite being an active member, president and chairman of several institutions, he never charged a penny for rendering his services. A farsighted philanthropist, he devoted himself selflessly to the service of society and mankind. Charity was a part of his daily life. He was the president of the Trust board, managing the Gita Press from 2014 and was instrumental in spreading the message of character building, human values and spiritual elevation based on scriptures and ancient Indian texts, many of which were published by the Gita Press under his guidance.

4. Under Shri Khemka's leadership more than 460 monthly editions, 38 yearly editions of 'Kalyan' were published. He actively contributed in the technical development of the legendary Gita press and started the publishing of other books including the knowledge of vedic rituals and sacraments for children. Approximately 9.5 Crore books of Gita press were published under his guidance. He established a Sanskrit Gurukul, 'Ved Vidyalaya' in Varanasi to preserve the vedic prescribed "karma-kanda" which continues to provide society with scholars of ritualistic traditional vedic knowledge. He played a key role in the establishment and management of several socio-literary institutes like Gita Press - Gorakhpur, L.N. Marwari Hospital, Birla Hospital, Mumukshu Bhawan (An Old Age home), Marwari Sewa Sangh, a Charitable Institute. He rendered widespread service in the protection and preservation of Holy cows.

5. Shri Khemka lived a life of monkhood although he did not adopt formal monastic order. His memorials are published in various books and comprehensive details of his association with the leading spiritual leaders in his life spanning over 80 years, are mentioned in several journals and books. He was also awarded the "Sahitya-Ratna" in Sanskrit and was a profound orator of Hindi and Sanskrit literature.

6. Shri Khemka passed away on 3rd March, 2021.

पद्म विभूषण



श्री राधेश्याम खेमका (मरणोपरांत)

श्री राधेश्याम खेमका ने दुर्लभ प्राचीन ग्रंथों को क्षेत्रीय भाषाओं में लिखने, संपादित करने और उसे प्रकाशित करते हुए सनातन साहित्य को जन-जन तक पहुँचाने का असाधारण कार्य किया। वे हिंदी में प्रकाशित होने वाले आध्यात्मिक मासिक 'कल्याण' के संपादक थे, जो पहली बार 1925 में गीता-प्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित किया गया था। यह पत्रिका देश और दुनिया भर में आध्यात्मिक साधकों के लिए एक पवित्र पुस्तक है।

2. 12 दिसंबर, 1935 को बिहार के बरहिया में जन्में, श्री खेमका राजस्थान के फतेहपुर शेखावाटी के एक मारवाड़ी परिवार से संबंध रखते थे। उन्होंने मुंगेर से प्राथमिक शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से कानून और संस्कृत में एम.ए. की पढ़ाई की। एक सांस्कृतिक मारवाड़ी परिवार में पले-पढ़े और भक्तिमय माहौल में बड़े होने के कारण, श्रद्धेय संतों और गुरुओं, खासकर सबसे श्रद्धेय संत, संत श्री करपात्री जी महाराज की संगति का उन पर गहरा असर पड़ा।

3. वर्ष 1956 में, श्री खेमका स्थायी रूप से काशी (वाराणसी) में जाकर बस गए और एक कागज व्यवसाय शुरू किया। बाद में उन्होंने कारोबार अपने उत्तराधिकारियों को सौंपकर खुद को पूरी तरह से संपादन, प्रकाशन और समाज कल्याण में समर्पित कर दिया। कई संस्थानों के सक्रिय सदस्य, अध्यक्ष और चेयरमैन होने के बावजूद, उन्होंने कभी भी अपनी सेवाओं के लिए एक पैसा नहीं लिया। एक दूरदर्शी परोपकारी होने के नाते, उन्होंने खुद को निःस्वार्थ भाव से समाज और मानवता की सेवा के लिए समर्पित कर दिया। दान उनके दैनिक जीवन का हिस्सा था। वह वर्ष 2014 से गीता प्रेस का प्रबंधन करने वाले ट्रस्ट बोर्ड के अध्यक्ष थे और शास्त्रों तथा प्राचीन भारतीय ग्रंथों, जिनमें से कई उन्होंने अपने मार्गदर्शन में गीता प्रेस से प्रकाशित किये, पर आधारित चरित्र निर्माण, मानवीय मूल्यों और आध्यात्मिक उत्थान के संदेश को फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

4. श्री खेमका के मार्गदर्शन में 'कल्याण' के 460 से अधिक मासिक संस्करण, 38 वार्षिक सालाना संस्करण प्रकाशित हुए। उन्होंने विख्यात गीता प्रेस के तकनीकी विकास में सक्रिय योगदान दिया और बच्चों के लिए वैदिक अनुष्ठानों और संस्कारों के ज्ञान सहित दूसरी पुस्तकों का प्रकाशन शुरू किया। उनके मार्ग दर्शन में गीता प्रेस की लगभग 9.5 करोड़ पुस्तकें प्रकाशित हुईं। उन्होंने वैदिक धर्म द्वारा निर्धारित कर्मकांडों को संरक्षित करने के लिए वाराणसी में संस्कृत गुरुकुल 'वेद विद्यालय' की स्थापना की जो अभी भी समाज को कर्मकांड के पारंपरिक वैदिक ज्ञान से संपन्न पंडित उपलब्ध कर रहा है। उन्होंने गीता प्रेस—गोरखपुर, एल एन मारवाड़ी अस्पताल, बिड़ला अस्पताल, मुमुक्षु भवन (वृद्धाश्रम), मारवाड़ी सेवा संघ, एक धर्मार्थ संस्था जैसे कई सामाजिक—साहित्यिक संस्थानों की स्थापना और प्रबंधन में प्रमुख भूमिका निभाई। उन्होंने गौ माताओं की सुरक्षा और संरक्षण में व्यापक योगदान किया।

5. श्री खेमका ने मठों का औपचारिक जीवन न अपनाने के बावजूद, एक संन्यासी का जीवन जिया। उनकी स्मृतियां कई पुस्तकों में प्रकाशित हुई हैं और 80 वर्षों से अधिक के जीवन में प्रमुख आध्यात्मिक नेताओं के साथ उनका व्यापक विवरण कई पत्रिकाओं और पुस्तकों में मिलता है। उन्हें संस्कृत में "साहित्य—रत्न" से भी सम्मानित किया गया था और वे हिंदी तथा संस्कृत साहित्य के एक प्रखर वक्ता थे।

6. श्री खेमका का 3 मार्च, 2021 को देहावसान हो गया।